द्वितीय वर्ष

कोर्स / पेपर	कोर्स कोड	प्रश्न पत्र	प्रश्नपत्र शीर्षक	क्रेडिट	पूर्णांक
शिक्षा के परिप्रेक्ष्य (Perspective of Education)	201	प्रथम प्रश्न पत्र	शैक्षिक प्रशासन,विद्यालय प्रबन्धन एवं स्वास्थ्य शिक्षा	4	80+20=100
	202	द्वितीय प्रश्न पत्र	ज्ञान,पाठ्यक्रम एवं मूल्याधारित शिक्षा	4	80+20=100
	203	तृतीय प्रश्न पत्र	माध्यमिक शिक्षा एवं सामावेशन	4	80+20=100
	204	चतुर्थ प्रश्न पत्र	वैकल्पिक प्रश्न पत्र (एक का चयन) क. समाज एवं शिक्षा में लिगंभेद ख. शान्ति एवं सद्भाव के लिये शिक्षा ग. शैक्षिक निर्देशन और परामर्श घ. पर्यावरण शिक्षा च. योग शिक्षा	4	80+20=100
प्रयोगाभ्यास **(Internship)** (विद्यालय सम्बद्वता) 16 सप्ताह			क.विषय शिक्षकों के निर्देशन एवं अध्यापक प्रशिक्षकों के पर्यवेक्षण में कक्षा शिक्षण और समस्त विद्यालयी गतिविधियों में सहभागिता ,व्यक्ति अध्ययन (समूह योजना) ख.दो शिक्षण विषयों की प्रायोगिक परीक्षा	14	100 150
व्यावसायिक क्षमता संर्वधन **(E.P.C.)**			1. व्यक्तित्व बोध (प्रयोग एवं परीक्षण) 2. विद्यालय एवं समुदाय सम्बन्धित गतिविधियों,स्काउट गाइड , शैक्षिक भ्रमण आदि।	2	50
				32	700

पूर्णांक विवरण

शिक्षाशास्त्री परीक्षा — पूर्णांक =1500

प्रथम वर्ष –सैद्धान्तिक – 600 प्रायोगिक –200 = 800
द्वितीय वर्ष–सैद्धान्तिक – 400 प्रायोगिक –300 = 700

कुल योग =1500

शिक्षाशास्त्री द्वितीय वर्ष पाठ्यक्रम

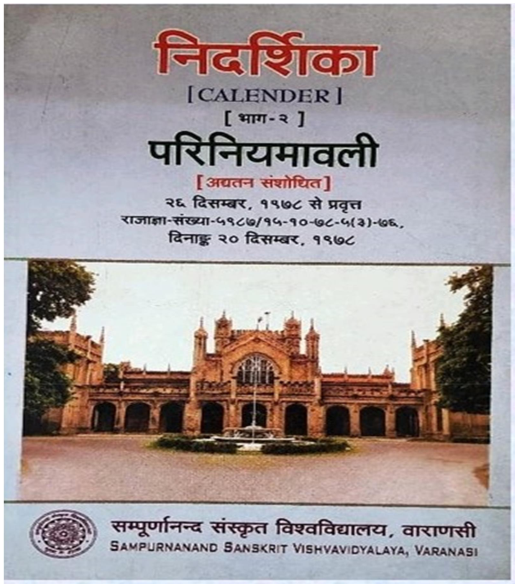
निदर्शिका
[CALENDER]
[भाग-२]
परिनियमावली
[अद्यतन संशोधित]
२६ दिसम्बर, १९७८ से प्रवृत्त
राजाज्ञा-संख्या-५९८७/१५-१०-७८-५(३)-७६,
दिनाङ्क २० दिसम्बर, १९७८
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
SAMPURNANAND SANSKRIT VISHVAVIDYALAYA, VARANASI

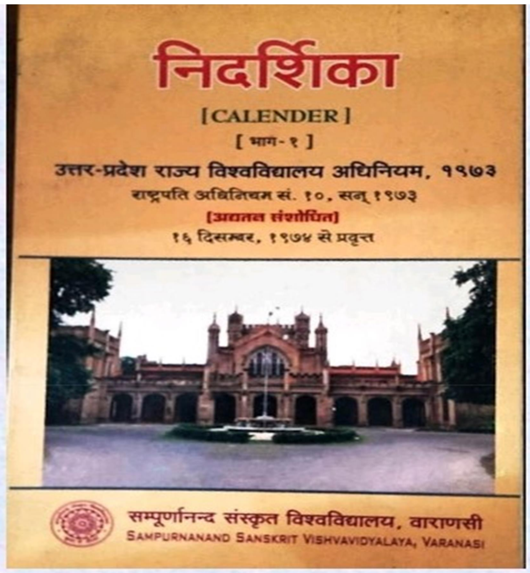
निदर्शिका
[CALENDER]
[भाग-१]
उत्तर-प्रदेश राज्य विश्वविद्यालय अधिनियम, १९७३
राष्ट्रपति अधिनियम सं. १०, सन् १९७३
(अद्यतन संशोधित)
१६ दिसम्बर, १९७४ से प्रवृत्त
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
SAMPURNANAND SANSKRIT VISHVAVIDYALAYA, VARANASI

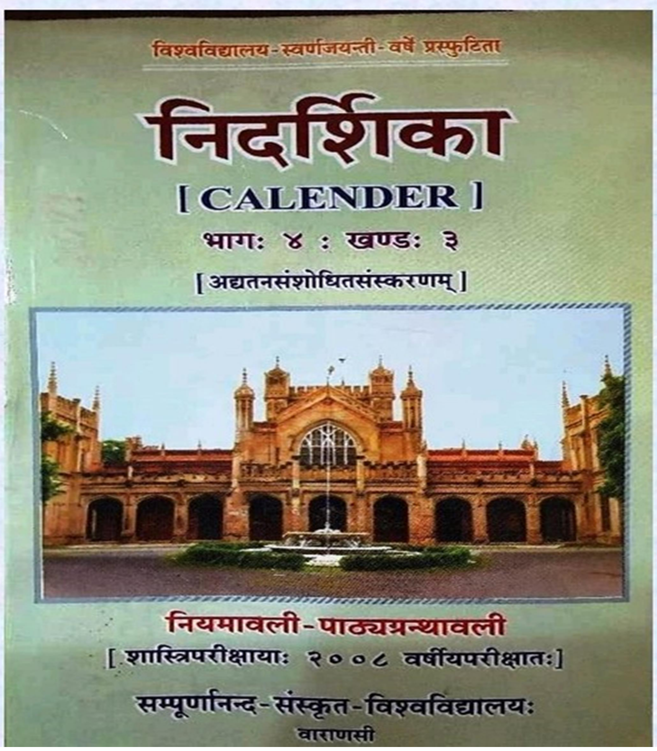
विश्वविद्यालय-स्वर्णजयन्ती-वर्षे प्रस्फुटिता
निदर्शिका
[CALENDER]
भागः ४ : खण्डः ३
[अद्यतनसंशोधितसंस्करणम्]
नियमावली-पाठ्यग्रन्थावली
[शास्त्रिपरीक्षायाः २००८ वर्षीयपरीक्षातः]
सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालयः
वाराणसी

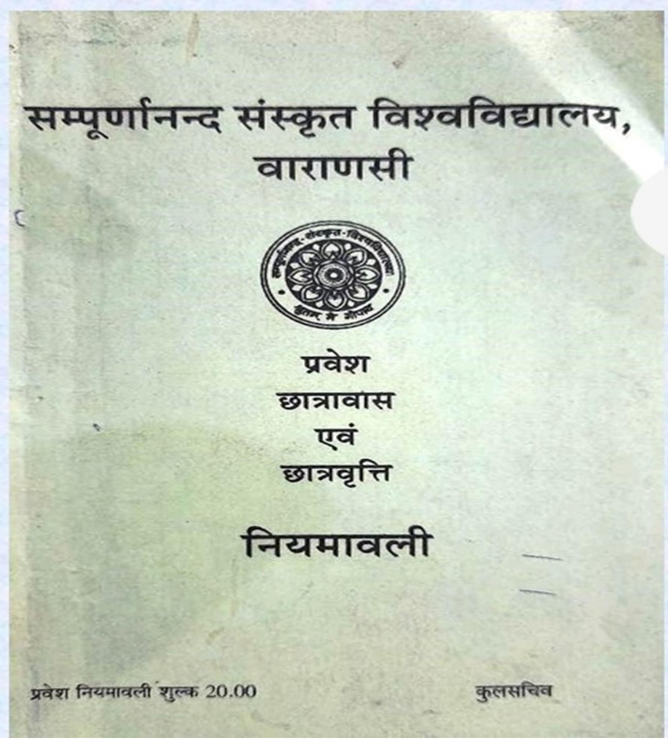
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय,
वाराणसी
प्रवेश
छात्रावास
एवं
छात्रवृत्ति
नियमावली
प्रवेश नियमावली शुल्क 20.00
कुलसचिव

वाद–विवाद प्रतियोगिता (जनवरी 2023)

संगीत/वाद्य यन्त्र प्रतियोगिता में पुरस्कृत छात्र

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

भारत 2023 INDIA

पत्रांक : सा. 2112/2023 दिनांक : 01 फरवरी, 2023

वसुधैव कुटुम्बकम्
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

कार्यालय-ज्ञाप

G-20 सम्मेलन के प्रदेश में व्यापक प्रचार-प्रसार के परिप्रेक्ष्य में भारतीय संस्कृति की विभिन्न विधाएँ विषय पर संगोष्ठी आयोजन दिनांक 03.02.2023 को अपराह्न 02:00 बजे योगसाधना केन्द्र में अधोलिखित विवरणानुसार आयोजित है :-

अध्यक्ष - प्रो. हरेराम त्रिपाठी, कुलपति, सं.सं.वि.वि., वाराणसी

मुख्य अतिथि - प्रो. राम पूजन पाण्डेय, अध्यापक परिषद्, सं.सं.वि.वि., वाराणसी

स्वागत भाषण - प्रो. हरिशंकर पाण्डेय, छात्रकल्याण संकायाध्यक्ष, सं.सं.वि.वि., वाराणसी

विद्वान वक्ता
1. प्रो. अमित कुमार शुक्ल, वेद वेदाङ्ग संकायाध्यक्ष, सं.सं.वि.वि., वाराणसी
2. प्रो. विजय कुमार पाण्डेय, साहित्य संस्कृति संकायाध्यक्ष, सं.सं.वि.वि., वाराणसी
3. प्रो. सुधाकर मिश्र, दर्शन संकायाध्यक्ष, सं.सं.वि.वि., वाराणसी
4. प्रो. हीरककान्ति चक्रवर्ती, आधुनिक ज्ञान-विज्ञान संकायाध्यक्ष, सं.सं.वि.वि., वाराणसी

संयोजक - प्रो. रमेश प्रसाद, विभागाध्यक्ष, पालि एवं थेरवाद विभाग, सं.सं.वि.वि., वाराणसी

उक्त कार्यक्रम में समस्त अध्यापक/अधिकारियों एवं छात्र-छात्राओं की उपस्थिति अपेक्षित है।

इस पर कुलपति महोदय की स्वीकृति प्राप्त है।

कुलसचिव
सं.सं.वि.वि., वाराणसी

प्रतिलिपि :- निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित -

1. सचिव कुलपति को कुलपति महोदय के अवलोकनार्थ।
2. समस्त संयोजकगण एवं सह-संयोजकगण।
3. समस्त संकायाध्यक्ष/विभागाध्यक्ष।
4. छात्रकल्याण संकायाध्यक्ष।
5. प्रो. रमेश प्रसाद, संयोजक, भारतीय संस्कृति की विभिन्न विधाएँ विषय पर संगोष्ठि का आयोजन, G-20
6. प्रो. दिनेश कुमार गर्ग, नोडल अधिकारी G-20
7. समस्त महानुभावगण।
8. पुस्तकालयाध्यक्ष।
9. निदेशक प्रकाशन/अनुसंधान संस्थान।
10. परीक्षा नियंत्रक।
11. सिस्टम मैनेजर।
12. आशुलिपिक कुलसचिव/वित्त अधिकारी।
13. समस्त सहायक कुलसचिव/समस्त अधीक्षक।
14. सम्पत्ति प्रभारी को आवश्यक व्यवस्था हेतु।
15. जनसम्पर्क अधिकारी।
16. समस्त विभागानुभाग।
17. समस्त सूचनापट्ट।
18. सम्बद्ध पत्रावली।

कुलसचिव
सं.सं.वि.वि., वाराणसी

स्थापना दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

पत्राङ्क : कु०स०5145 /2023 दिनाङ्क : 24 मार्च, 2023

कार्यालय-ज्ञाप

विश्वविद्यालय का 66वाँ स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर "राष्ट्रीय कविसम्मेलन" एवं "अष्टावधान" कार्यक्रम के सफल संचालन हेतु अधोलिखित महानुभावों की समिति गठित की जाती है -

समिति

'राष्ट्रीय कविसम्मेलन' कार्यक्रम			'अष्टावधान' कार्यक्रम		
1.	प्रो० रामकिशोर त्रिपाठी	सदस्य	1.	प्रो० अमित कुमार शुक्ल	सदस्य
2.	प्रो० राजपूजन पाण्डेय	सदस्य	2.	डॉ० दिव्य चेतन ब्रह्मचारी	सदस्य
3.	प्रो० सुधाकर मिश्र	सदस्य	3.	डॉ० ज्ञानेन्द्र सापकोटा	सदस्य
4.	प्रो० कमलाकान्त त्रिपाठी	सदस्य	4.	डॉ० विजय शर्मा	सदस्य
5.	प्रो० हरिप्रसाद अधिकारी	संयोजक	5.	डॉ० कुञ्ज विहारी द्विवेदी	सदस्य
6.	प्रो० दिनेश कुमार गर्ग	सह-संयोजक	6.	डॉ० दुर्गेश पाठक	सदस्य
7.	प्रो० विजय कुमार पाण्डेय	सह-संयोजक	7.	प्रो० हरिप्रसाद अधिकारी	संयोजक
8.	डॉ० नितिन आर्य	सह-संयोजक	8.	प्रो० दिनेश कुमार गर्ग	सह-संयोजक
			9.	प्रो० विजय कुमार पाण्डेय	सह-संयोजक

इस पर आधिकारिक स्वीकृति प्राप्त है।

24-3-23
कुलसचिव

प्रतिलिपि - निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

1. सचिव, कुलपति को कुलपति महोदय के अवलोकनार्थ।
2. प्रो० हरिप्रसाद अधिकारी, संयोजक- 'कविसम्मेलन' एवं 'अष्टावधान' कार्यक्रम।
3. समिति के समस्त संयोजकगण/सदस्यगण।
4. समस्त संकायाध्यक्ष/विभागाध्यक्ष।
5. पुस्तकाध्यक्ष।
6. निदेशक प्रकाशन/अनुसंधान।
7. परीक्षा नियंत्रक।
8. समस्त सहायक कुलसचिव।
9. आशुलिपिक कुलसचिव/वित्त अधिकारी।
10. समस्त अधिक्षकगण।
11. जनसम्पर्क अधिकारी।
12. सम्बद्ध पत्रावली।

24-3-23
कुलसचिव

कर्त्तव्य बोध हेतु छात्राओं से विचार–विमर्श

नेता जी सुभाष चन्द्र बोस की जयन्ती पर कार्यक्रम

राष्ट्र के विकास में मुख्य आधार स्तम्भ होते हैं श्रमिक : कुलपति

वाराणसी। सम्पूर्णानन्दसंस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो हरेराम त्रिपाठी ने अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस के अवसर पर कहा कि श्रमिक जो की सदैव हमारे राष्ट्र के विकास के मुख्य आधार हैं उनके बदौलत ही हम सदैव संसाधन युक्त जीवन जीने को पाते हैं। कुलपति प्रो हरेराम त्रिपाठी ने कहा की भारतीय संस्कृति में सदैव श्रमिकों का ध्यान रखा जाता है हमारी पौराणिक कथा पूजन एवं किसी कर्मकाण्ड में भी उनके श्रम का वास्तविक महत्व दिया जाता है इस दिवस पर विश्वविद्यालय मिशन के अन्तर्गत एक जलपान [illegible] का आयोजन कर कुछ श्रमिकों को माल्यार्पण कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर आधुनिक ज्ञान विज्ञान एवं भाषा विज्ञान के संकायाध्यक्ष प्रो. हीरक कांत चक्रवर्ती, [illegible] मिशन की अध्यक्ष डॉ. विजयलक्ष्मी शुक्ला ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि मजदूर दिवस मनाने की सार्थकता इस बात में है कि सर्वहारा वर्ग के प्रति हमारे हृदय में सम्मान का भाव होना चाहिए और हमें उनके हक और सम्मान के लिए अपनी आवाज बुलंद करनी चाहिए। मजदूर दिवस पर [illegible] अवसर पर मंगल मिस्त्री, कमला देवी एवं राकेश कुमार आदि श्रमिकों को माल्यार्पण कर अंगवस्त्रम् पहनाया गया। अंत में नेहा सिंह, पूनम पाण्डेय, प्रियंका ने गीत तथा [illegible] त्रिपाठी ने [illegible] किया। उक्त अवसर पर डॉ कृष्ण कुमार, डॉ सत्य प्रकाश [illegible], डॉ अरविंद चौधरी, गोविंद त्रिपाठी, [illegible], संदीप, अनूप सिंह, मितेश, पंकज आदि उपस्थित थे।

युवा महोत्सव का आगाज दौड़ में अव्वल रहे बलवंत

संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय में महोत्सव का कुलपति ने किया उद्घाटन

संवाद न्यूज एजेंसी

वाराणसी। संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय में बृहस्पतिवार को युवा महोत्सव का आगाज हुआ। चार दिवसीय महोत्सव के पहले दिन एथलेटिक्स प्रतियोगिता में बलवंत उपाध्याय अव्वल रहे।

100, 200 और 400 मीटर दौड़ में बलवंत उपाध्याय ने पहला स्थान हासिल किया। 800 मीटर दौड़ में प्रशांत कुमार ने बाजी मारी। प्रदुम्न मिश्र, शुभम् द्विवेदी, गौरव मिश्र व प्रवीण मिश्र, बृजेश तिवारी दूसरे और कार्तिक प्रजापति, पुनीत पांडेय, गौरव मिश्र ने तीसरा स्थान हासिल किया।

विजय कुमार शर्मा, डॉ. कुंज बिहारी द्विवेदी, डॉ. दुर्गेश पाठक, डॉ विजेन्द्र आर्य, डाक्टर नितिन आर्य निर्णायक की भूमिका में रहे। 21 मई तक चलने वाले महोत्सव का उद्घाटन कुलपति प्रो. हरेराम त्रिपाठी ने किया। इस मौके पर इंडियन बैंक के विपुल कुमार पांडेय, गौरव कुमार, विनयाधिकारी प्रो. दिनेश, प्रो. हीरक कांत, प्रो. शैलेश कुमार उपस्थित रहे।

संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय में कबड्डी खेलते छात्र। संवाद

कबड्डी में वेद वेदांग संकाय ने मारी बाजी

युवा महोत्सव की दूसरी पाली में कबड्डी प्रतियोगिता हुई। जिसमें वेद वेदांग संकाय की टीम ने मिश्रित टीम को पराजित किया। विजेता की टीम की कप्तानी मनीष कुमार की जबकि उपविजेता टीम के कप्तान दीपक शुक्ल रहे।

भाषाई एवं खानपान विविधता सम्बन्धी कार्यक्रम

हिन्दी मिलाप

'राष्ट्रीय शिक्षा नीति के आलोक में भारत केंद्रित शिक्षा' पर हुई चर्चा

हैदराबाद, 7 फरवरी-(मिलाप ब्यूरो) केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के व्याख्यान सभागार में अंतरराष्ट्रीय संस्था हिन्दी साहित्य भारती की प्रदेश इकाई तेलंगाना हिन्दी साहित्य भारती एवं केन्द्रीय हिन्दी संस्थान हैदराबाद के संयुक्त तत्वावधान में व्याख्यान का आयोजन किया गया।

आज यहाँ जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, कार्यक्रम का संचालन संस्थान के असिस्टेंट प्रो. डॉ. साईनाथ विट्ठल चपले ने किया। मुख्य अतिथि शिक्षाविद् प्रो. प्रेम नारायण सिंह (निदेशक, अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र) तथा अन्य अतिथियों का शॉल एवं मुक्ता माला से स्वागत किया गया। केन्द्रीय हिन्दी संस्थान से डॉ. राधा सांगिली ने तथा दक्षिण भारत हिन्दी संस्थान के प्राचार्य डॉ. सी.एम. मुदुटकर, विभागाध्यक्ष डॉ. संजय मदार, वरिष्ठ प्रवक्ता ए.जी. श्रीराम, प्रवक्ता एस. जुबेर अहमद (कर्नूल) मिर्जा ख्वाजा बेग ने प्रो. प्रेम नारायण का शॉल व पुष्प माला से स्वागत सत्कार किया। दयाशंकर प्रसाद ने मुख्य अतिथि का परिचय दिया। डॉ. सुरभि दत्त ने तिरुपति से विशेष रूप पधारे राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ तिरुपति के शिक्षा विभाग के पूर्व अध्यक्ष कुल सचिव प्रो. के.आर.एस. मेनन का आभार जताया। प्रो. प्रेम नारायण ने कहा कि गुरु अपनी ज्ञान वाणी से सभी का कल्याण करते हैं। उनका प्रत्येक आचरण शिक्षाप्रद होता है। महामंत्री डॉ. राजीव कुमार सिंह तथा प्रभारी डॉ. सुरभि दत्त ने मुख्य अतिथि को फल भेंट कर शिक्षा रत्न-2023 से सम्मानित किया।

'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में भारत केंद्रित शिक्षा' पर साहित्यकार प्रो. ऋषभदेव शर्मा (पूर्व विभागाध्यक्ष, उच्च शिक्षा केन्द्र दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा) ने कहा कि भारत वसुधैव कुटम्बकम् की अवधारणा में विश्वास रखता है। यह मेरा है, यह उसका है, ऐसी सोच संकुचित चित्त वाले व्यक्तियों की होती है। इसके विपरीत उदारचरित वाले लोगों के लिए तो यह सम्पूर्ण धरती ही एक परिवार जैसी होती है। नई शिक्षा नीति में नैतिक शिक्षा पर जोर दिया गया है, जिससे भारत का हर युवा विश्व

शिक्षा नीति पर व्याख्यान देते प्रेम नारायण सिंह। अवसर पर उपस्थित केंद्रीय हिन्दी संस्थान के अधिकारी एवं साहित्यप्रेमी।

नागरिक बन सके। यह स्पष्टता और सरलता लेकर आई है। भाषाओं के मध्य आत्मीयता आवश्यक है।

प्रो. मेनन ने कहा कि नई शिक्षा नीति विकासोन्मुख नीति है। भारतीय भाषाओं को समीप लाने की दिशा में एक प्रयास है। मुख्य अतिथि प्रो. प्रेम नारायण ने कहा कि अंग्रेजों द्वारा अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिये थोपी गई शिक्षा की भेड़चाल नीति से बाहर आकर हमें नई शिक्षा नीति की जड़ में जाना होगा, उसे समझना होगा। उत्तर दक्षिण को दूर करने वाली नीति को त्यागना भारत के हित के लिए आवश्यक है। हमें नहीं भूलना चाहिए कि भारत ऋषियों, विद्वानों, गणितज्ञों, अर्थशास्त्रियों, वैज्ञानिकों की भूमि है। इसे अमेरिका जैसे अनेक देश भी मानते हैं। यह विडंबना ही है कि हम अपने ही भारत को विदेशियों की आँखों से देखते आए हैं। नई शिक्षा नीति भारत के प्राचीन गौरव और भारतीय भाषाओं के महत्व का आलोक लेकर आई है। उससे लाभान्वित होना हमारे हाथ में है।

डॉ. राजीव सिंह ने विभिन्न भागों और विदेश से आए अतिथियों का परिचय कराया। इसी क्रम में तेलंगाना हिन्दी साहित्य भारती द्वारा मॉरिशस में आयोजित विश्व हिन्दी सम्मेलन में सहोदरी एवं सहोदरी रत्न से सम्मानित हैदराबाद का प्रतिनिधित्व कर लौटे प्रदीप कुमार दत्त तथा सुरभि दत्त का मुख्य अतिथि ने सम्मान किया।

क्षेत्रीय निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, हैदराबाद डॉ. गंगाधर वानोडे कहा कि सिद्धांत तभी सार्थक हैं, जब उसे व्यवहार में लाया जाए। नई शिक्षा नीति पर यही नियम लागू होता है। उन्होंने बताया कि केन्द्रीय हिन्दी संस्थान नियमित रूप से दक्षिण भारत राज्यों के शिक्षकों के लिए हिन्दी भाषा की प्रशिक्षण कक्षाएँ संचालित करता है। हिन्दी का प्रचार प्रसार और साहित्य संवर्धन इसका लक्ष्य है। संस्थान की साहित्य एवं संस्कृति केन्द्रित पत्रिका 'समन्वय दक्षिण' दक्षिण राज्यों के लेखकों को प्रकाशित करता है। शिल्पी भटनागर ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

तत्पश्चात डॉ. ऋषभदेव शर्मा की अध्यक्षता में काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। विनीता शर्मा, सुनीता लुल्ला, ज्योति नारायण, चंद्रप्रकाश दायमा, दयाशंकर प्रसाद, प्रदीप देवीशरण भट्ट, सुहास भटनागर, बिनोद गिरी, संतोष रज़ा, डॉ. सुषमा देवी, मोहिनी गुप्ता, शिल्पी भटनागर, डॉ. राजीव सिंह, डॉ. सुरभि दत्त, रेखा अग्रवाल, सूरज कुमारी तथा राशि ने काव्य पाठ किया। डॉ. राजीव कुमार सिंह के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ गोष्ठी संपन्न हुई।

Hindi Milap Edition
Feb 8, 2023 Page No. 10
Powered by : eReleGo.com

अन्य भाषाओं के ग्रंथों का संस्कृत में अनुवाद जरूरी

माई सिटी रिपोर्टर

वाराणसी। सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. गोपबंधु मिश्र ने कहा कि संस्कृत शास्त्रों के विकास के लिए दूसरी भाषाओं के महत्वपूर्ण ग्रंथों का अनुवाद कर लोकजन के लिए सहज बनाया जाए।

अनुवाद भाषा का होगा भावों का नहीं। इसके सतत विकास के लिए नए शब्दों के सृजन की भी जरूरत है। वह शुक्रवार को संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, आईकेएस सेंटर, संस्कृत भारती एवं भारती भाषा समिति की कार्यशाला को संबोधित कर रहे थे।

प्रो. हरिप्रसाद अधिकारी ने कहा कि संस्कृत तभी जनभाषा बन सकती है जब उसके मानक सरल होंगे। मुख्य वक्ता जेएनयू के प्रो. गिरीश नाथ झा ने कहा कि संस्कृतज्ञों का परस्पर समन्वय ही राष्ट्र उन्नति में सहायक हो सकता है। प्रो. हरिशंकर पांडेय ने कहा कि संस्कृत एक वर्ग विशेष की भाषा नहीं विश्वस्तरीय भाषा है।

कार्यशाला में मौजूद अतिथि।

जेएनयू के प्रो. संतोष कुमार शुक्ल ने कहा कि भारतीय भाषाओं का उत्तर से दक्षिण तक का संस्कृत से अटूट रिश्ता है। प्रो. रामपूजन पांडेय ने कहा कि संस्कृत ही इस राष्ट्र की नींव है। प्रो. रमेश प्रसाद ने कहा कि संस्कृत आत्म शुद्धि और चिंतन की भाषा है। पाली और प्राकृत भाषा ही संस्कृत के दो हाथ हैं। संचालन डॉ. रविशंकर पांडेय ने किया।

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

पत्राङ्क : कु.स. 5078 /2023 दिनाङ्क : 25 मार्च, 2023

कार्यालय-ज्ञाप

महावीर जयन्ती के उपलक्ष्य में एक दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 06.04.2023 को अपराह्न 02:00 बजे से योग साधना केन्द्र में मा॰ कुलपति महोदय प्रो॰ हरेराम त्रिपाठी के अध्यक्षता एवं प्रो॰ हरिशंकर पाण्डेय, छात्रकल्याण संकायाध्यक्ष के संयोजकत्व में आयोजित है। संगोष्ठी में अधोलिखित बाह्य विद्वान आमंत्रित है -

1. प्रो॰ रामप्रकाश द्विवेदी
2. प्रो॰ फूलचन्द जैन
3. श्री अशोकमुथा जैन
4. डॉ॰ लुसी गेस्ट
5. सुश्री मारया रुईज
6. सुश्री ईशाबेल

उक्त संगोष्ठी में विश्वविद्यालय के समस्त अध्यापकों की उपस्थिति अपेक्षित है।

इस पर आधिकारिक स्वीकृति प्राप्त है।

25-3-23
कुलसचिव

प्रतिलिपि - निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

1. सचिव, कुलपति को कुलपति महोदय के अवलोकनार्थ।
2. समस्त संकायाध्यक्ष/विभागाध्यक्ष।
3. पुस्तकालयाध्यक्ष।
4. निदेशक प्रकाशन/अनुसंधान।
5. परीक्षा नियंत्रक।
6. समस्त सहायक कुलसचिव।
7. आशुलिपिक कुलसचिव/वित्त अधिकारी।
8. समस्त अधिक्षकगण।
9. जनसम्पर्क अधिकारी।
10. सम्बद्ध पत्रावली।

25-3-23
कुलसचिव

पाली साहित्य में बुद्ध के उपदेशों का संग्रह

बोले प्रो. प्रदुम्न दुबे

संविवि में आचार्य जगन्नाथ उपाध्याय स्मृति व्याख्यानमाला

जनसंदेश न्यूज

व्याख्यान माला में उपस्थित वीसी व अतिथि

वाराणसी। बीएचयू के पालि और दर्शन विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. प्रदुम्न दुबे ने कहा कि पालि साहित्य में मुख्यतः बौद्ध धर्म के प्रवर्तक भगवान बुद्ध के उपदेशों का संग्रह है, किन्तु यह कहना कठिन है कि इसका कोई भाग बुद्ध के जीवनकाल में व्यवस्थित या लिखित रूप धारण कर चुका था। गुरुवार को वे सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय योगसाधना केन्द्र में आचार्य जगन्नाथ उपाध्याय स्मृति व्याख्यानमाला को संबोधित कर रहे थे।

बौद्ध मत में नारी और पाली भाषा एवं साहित्यः चुनौतियां तथा समाधान विषय आयोजित व्याख्यान माला में कहा कि पालि प्राचीन उत्तर भारत के लोगों की भाषा थी। जो पूर्व में बिहार से पश्चिम में हरियाणा-राजस्थान तक और उत्तर में नेपाल-उत्तरप्रदेश से दक्षिण में मध्यप्रदेश तक बोली जाती थी। भगवान बुद्ध भी इन्हीं प्रदेशों में विहरण करते हुए लोगों को धर्म समझाते रहे।

अध्यक्षता करते हुये कुलपति प्रो. हरेराम त्रिपाठी ने कहा कि आचार्य जगन्नाथ जी का सम्पूर्ण पारिवारिक पृष्ठभूमि संस्कृतमय रहा है। गांधीजी के विचारधारा से युक्त होकर सदैव दलितों के प्रति उदार भाव से उन्हे ऊपर उठाने का प्रयास करते रहे। उन्होंने सदैव भारतीय संस्कृति को बढ़ाने तथा लोगों की संकीर्ण मानसिकता को दूर करने का सतत प्रयास किया।

विशिष्ट वक्ता प्रो. हरप्रसाद दिक्षित, प्रो. रमेश प्रसाद, प्रो. रामकिशोर त्रिपाठी, प्रो. रामपूजन पाण्डेय, प्रो. हरिप्रसाद अधिकारी, प्रो. सुधाकर मिश्र, प्रो. शैलेश कुमार मिश्र, प्रो. प्रेमचंद जैनी, प्रो. हीरककान्ति चक्रवर्ती, डॉ. कुंज बिहारी द्विवेदी उपस्थित रहे। स्वागत प्रो. हरिशंकर पाण्डेय और धन्यवाद ज्ञापन डॉ. रविशंकर पाण्डेय ने किया।

32 वर्ष रजत जयंती पर्व
राष्ट्रीय दैनिक समाचार पत्र
स्वतंत्र चेतना

संस्कृत भाषा के विकास के लिए संस्कृत में व्यवहार अनिवार्य–प्रो.रमेश प्रसाद

स्वतंत्र चेतना

वाराणसी। संस्कृत में बात करने से संस्कृत भाषा का अभ्यास सरल और शीघ्र हो जाता है। जो भाषा दैनिक व्यवहार में आती है वह बढ़ती है और उसका विकास होता है। संस्कृत भाषा के विकास के लिए संस्कृत में व्यवहार अनिवार्य है। लिखे हुए को पढ़ने की अपेक्षा बोली हुई भाषा का श्रवण करने से उसका सरलता से बोध होता है। ध्वनि अभिनय, मुख के भाव और परिसर वातावरण आदि इसके कारण है। अतः संस्कृत संभाषण से संस्कृत सरल है जनमानस में इस भावना का निर्माण होगा। संभाषण में चैतन्य होता है अतः अन्य व्यक्ति भी बोलने को उत्साहित होता है।

इस प्रकार संस्कृत भाषा व्यक्ति तक पहुँचती है। जाति, मत, प्रदेशादि भेद-भाव के बिना ही सब लोगों को इसका ज्ञान होता है।

उक्त विचार बतौर मुख्य अतिथि सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में शिक्षाशास्त्र विभाग के तत्वावधान दस दिवसीय कार्यशाला संस्कृत सम्भाषण का समापन समारोह में श्रमण विद्या संकायाध्यक्ष प्रो रमेश प्रसाद ने व्यक्त किया।

प्रो रमेश प्रसाद ने कहा कि संस्कृत भाषा संस्कृति की वाहिका है। इस कारण से यदि यह दैनिक व्यवहार में आती है तो संस्कृति के जीवनादर्शन भी व्यवहार में आयेंगे। सम्भाषण कार्यशाला की संयोजीका एवं शिक्षा शास्त्र विभाग प्राध्यापिका डॉ विशाखा शुक्ला ने सभी आगन्तुकों एवं प्रशिक्षकों एवं प्रशिक्षार्थियों का स्वागत अभिनंदन करते कहा कि संस्कृत संभाषण से लोगों के हृदय में स्वाभिमान का निर्माण होता है। समाज के उपेक्षित वर्गए जो लोग बहुत समय से संस्कृत शिक्षण से वंचित रहे उनमे संस्कृत शिक्षण से बहुत परिवर्तन होता है। समग्र देश के नगर व गाँव में संस्कृत संभाषण शिविर चलाने से ऐसा अनुभव हुआ है। इस प्रकार सामाजिक समरसता लाने में सामाजिक परिवर्तन करने में संस्कृत संभाषण की एक महत्वपूर्ण भूमिका होगी। डॉ विशाखा ने शिक्षाशास्त्री प्रथम एवं द्वितीय के छात्र . छात्राओं को इस अवसर पर कार्यशाला में प्राप्त अनुभव को साझा किया।

संस्कृत सम्भाषण के प्रशिक्षक डॉ रविशंकर पान्डेय ने दस दिवसीय कार्यशाला के रूपरेखा का सम्पूर्ण विवरण प्रस्तुत करते हुये कहा कि संस्कृत सम्भाषण के माध्यम से संस्कृत के सरलीकरण का प्रभाव व स्वतः आत्मिक लगाव बढ़ता हैएइसी तरह से लोगों का जुड़ाव होता रहा तो एक दिन संस्कृत पुनः आमजन की भाषा सिद्ध होगी। मुख्यअतिथि प्रो .रमेश प्रसाद के द्वारा प्रशिक्षिकों को प्रमाणपत्र प्रदान किया गया।

विश्वविद्यालय के संस्थापक डॉ सम्पूर्णानंद जी की 133 वें जयंती महोत्सव

सूर्य की भांति काशी ही नहीं साथ–साथ सम्पूर्ण भारत देश को प्रकाशित किया--- कुलपति प्रो बिहारी लाल शर्मा

मुरादाबाद उजाला/ रोहित सेठ

साहित्यप्रेमी, राजनेता,पत्रकार, लेखक,अध्यापक एवं समाजसेवी डॉ सम्पूर्णानंद का जन्म काशी के एक विद्वान श्री विजयानंद के घर में 01 जनवरी 1891 को हुआ था प्रारम्भिक शिक्षा घर पर होने के बाद उन्हें काशी के विख्यात हरिश्चंद्र स्कूल और फिर क्विंस कालेज में अध्ययन किये।फिर वृंदावन में एक महाविद्यालय में अध्यापक बन गये।वे सूर्य की भांति काशी के साथ साथ सम्पूर्ण देश में अपने प्रकाश से प्रकाशित किए। उक्त विचार सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के कुलपति प्रो बिहारी लाल शर्मा ने विश्वविद्यालय के संस्थापक पूर्व मुख्यमंत्री डॉ सम्पूर्णानंद जयंती समारोह में बतौर अध्यक्षीय उद्बोधन में व्यक्त किया।

कुलपति प्रो बिहारी लाल शर्मा ने कहा कि अध्यापन के साथ ही स्वाध्याय पर भी ध्यान था। आप बहुआयामी व्यक्तित्व तथा साहित्य, कला, संस्कृति के क्षेत्र में समान अधिकार रखते हुये कुशल लेखक, राजनेता, एवं उत्कृष्ट वक्ता थे।आपके मौलिक लेखन से सभी प्रेरित होते हैं।आपके प्रयास से स्वस्थ मंच के रूप में इस संस्था का उदय हुआ जहां पर प्राच्यविद्या का संरक्षण- संवर्धन होता है आज इसी प्रारूप से संस्कृत के कई विश्वविद्यालयों का निर्माण किया गया है।डॉ संपूर्णानंद जी बहुत स्पष्टवादी थे जिसका उनके जीवन में पीड़ा भी सहना पड़ा।

कुलपति प्रो शर्मा ने कहा कि आज उनके जयंती समारोह में उनके व्यक्तित्व- कृतित्व से हम संकल्प लें कि उनके विचारों के अनुरूप अपने जीवन को ढालकर लें चलें।आज के इस जयंती समारोह को संकल्प दिवस के रूप मनाया जाए।

डॉ सम्पूर्णानंद जी के प्रतिमा पर माल्यार्पण

जयंती के प्रारम्भ में कुलपति प्रो बिहारी लाल शर्मा एवं विश्वविद्यालय परिवार के साथ परिसर में स्थापित डॉ संपूर्णानंद जी के प्रतिमा पर माल्यार्पण कर याद किया गया।

मंगलाचरण, दीप प्रज्वलन तथा माँ सरस्वती एवं डॉ सम्पूर्णानंद जी के चित्र पर माल्यार्पण किया गया।

प्रो रामकिशोर त्रिपाठी।

प्रो रामपूजन पाण्डेय ने उनके व्यक्तित्व परिचय देते हुए कहा कि उन्होंने वेदांत, सामाजिक चेतना,समाजवाद सहित अनेकों क्षेत्रों को लेकर तथा संस्कृत में भी पुस्तक एवं श्लोक लिखी गयी इसके साथ ही बंगला, अंग्रेजी आदि भाषाओं में उनके लेखन हैं।

संचालन – डॉ मधुसूदन मिश्र.

प्रो हरिप्रसाद अधिकारी ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रो रजनीश कुमार शुक्ल, प्रो हरिप्रसाद अधिकारी, प्रो जितेन्द्र कुमार, प्रो विजय कुमार पाण्डेय, रमेश प्रसाद, प्रो महेंद्र पाण्डेय, प्रो विधु द्विवेदी, प्रो राजनाथ, डॉ विजय कुमार शर्मा।

डॉ0 सम्पूर्णानन्द जयन्ती (01.01.2024)

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

पत्रांक : कु.स. S491/2023 दिनांक : 12 अप्रैल, 2023

कार्यालय-ज्ञाप

डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयन्ती, 14.04.2023 के उपलक्ष्य में एवं G-20 के सुअवसर पर **'भारतीय ज्ञान परम्परा- सामाजिक समरसता एवं डॉ. भीमराव अम्बेडकर'** विषयक एक दिवसीय अन्ताराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन दिनाङ्क 16.04.2023 को अपराह्न 02:00 बजे योगसाधना केन्द्र में प्रो. हरेराम त्रिपाठी, माननीय कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी की अध्यक्षता में आहूत है। संगोष्ठी में अनेक विद्वान सम्मिलित होंगे। उक्त संगोष्ठी प्रो. हरिशंकर पाण्डेय, आचार्य- प्राकृत एवं जैनागम विभाग के संयोकत्व एवं डॉ. रविशंकर पाण्डेय, डॉ. देवात्मा दुबे, श्री श्रवण कुमार, श्री सुरजभान के सह-संयोजकत्व में होगी।

उपर्युक्त अवसर पर समस्त आदरणीय आचार्यों, शोधछात्रों, छात्रों की उपस्थिति प्रार्थित है। इसमें संगोष्ठी प्रमाण-पत्र भी प्राप्तव्य होगा।

इस पर आधिकारिक स्वीकृति प्राप्त है।

12-4-23
कुलसचिव
सं.सं.वि.वि., वाराणसी

प्रतिलिपि :- निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित -

1. सचिव, कुलपति को कुलपति महोदय के अवलोकनार्थ।
2. समस्त संकायाध्यक्ष/विभागाध्यक्ष।
3. संयोजक- प्रो. हरिशंकर पाण्डेय, आचार्य- प्राकृत एवं जैनागम विभाग।
4. समस्त सहायक संयोजकगण।
5. छात्र कल्याण संकायाध्यक्ष।
6. पुस्तकालयाध्यक्ष।
7. निदेशक, प्रकाशन/अनुसंधान संस्थान।
8. सहायक कुलसचिव (प्रशासन)।
9. आशुलिपिक, कुलसचिव/वित्त अधिकारी।
10. अधीक्षक, सामान्यानुभाग।
11. सम्पत्ति प्रभारी, आवश्यक व्यवस्था हेतु।
12. उद्यान प्रभारी।
13. सम्बद्ध पत्रावली।

12-4-23
कुलसचिव
सं.सं.वि.वि., वाराणसी

कर्त्तव्य बोधक ज्ञानफलक

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

पत्रांक–सा02420 / 2023 दिनांक।9 मार्च, 2023

कार्यालय–ज्ञाप

श्रमण विद्या संकाय के प्रथम संकायाध्यक्ष प्रो0 जगन्नाथ उपाध्याय की स्मृति में श्रमण विद्या संकाय द्वारा आयोजित अधोलिखित कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के समस्त अध्यापकों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं छात्रों की उपस्थिति प्रार्थित है।

कार्यक्रम का विवरण

दिनांक	– 28 मार्च, 2023, दिन मंगलवार, मध्याहन 12:00 बजे
विषय	– 1. अभिधम्म दर्शन में कर्म एवं पुनर्जन्म 2. अभिधम्म ग्रन्थों में हदयवत्थु
स्थान	– योगसाधना केन्द्र
अध्यक्ष	– प्रो0 हरेराम त्रिपाठी, कुलपति, सं0सं0वि0वि0, वाराणसी।
मुख्य वक्ता	– प्रो0 बिमलेन्द्र कुमार, आचार्य, पालि एवं बौद्ध अध्ययन विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
संयोजक	– प्रो0 रमेश प्रसाद, अध्यक्ष, पालि एवं थेरवाद विभाग, सं0सं0वि.वि0, वाराणसी

इस पर आधिकारिक स्वीकृति प्राप्त है।

कुलसचिव

प्रतिलिपि – निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित –

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

पत्रांक : कु.स.4872/2023 दिनांक 13 मार्च, 2023

कार्यालय-ज्ञाप

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, आई0के0एस0 सेन्टर, संस्कृत भारतीय काशी प्रान्त एवं भारतीय भाषा समिति के संयुक्त तत्त्वावधान में त्रिदिवसीय कार्यशाला दिनांक 16, 17 एवं 18 मार्च, 2023 विषय/थीम-भारतीय भाषाओं में संस्कृत भाषा के अध्यापक एवं छात्रों में कौशल का विकास पर कार्यशाला का आयोजन

उद्‌घाटन	- 16 मार्च, 2023 (प्रथम दिवस) प्रथम सत्र, समय-10:30 से 12:00
स्थान	- पाणिनि भवन सभागार

उद्‌घाटन सत्र

अध्यक्ष	- प्रो॰ हरेराम त्रिपाठी, कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
मुख्य अतिथि	- श्रीमान् दिनेश कामत महोदय, अखिल भारतीय संगठन मंत्री, संस्कृत भारती
विशिष्ट अतिथि	- मा॰ नीलकण्ठ तिवारी, पूर्व पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री, उत्तर प्रदेश शासन
विशिष्ट अतिथि	- श्री कौशल राज शर्मा, आयुक्त, वाराणसी मण्डल, वाराणसी
सारस्वत अतिथि	- प्रो॰ आनन्द के॰ त्यागी, कुलपति, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी
सान्निध्यम्	- प्रो॰ कृष्णकान्त शर्मा, काशी प्रान्ताध्यक्ष एवं संस्कृत भारती

सभी सत्रों में विश्वविद्यालय के समस्त अध्यापकों एवं छात्रों की उपस्थिति अनिवार्य है।

इस पर आधिकारिक स्वीकृत प्राप्त है।

13/3
सहायक कुलसचिव (प्रशासन)

प्रतिलिपि :- निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित -
1. सचिव कुलपति को कुलपति महोदय के अवलोकनार्थ।
2. समस्त संकायाध्यक्ष/विभागाध्यक्ष।
3. छात्रकल्याण संकायाध्यक्ष।
4. पुस्तकालयाध्यक्ष।
5. निदेशक प्रकाशन/अनुसंधान संस्थान।
6. परीक्षा नियंत्रक।
7. आशुलिपिक कुलसचिव/वित्त अधिकारी।
8. सम्पत्ति प्रभारी को आवश्यक व्यवस्था हेतु।
9. समस्त सहायक कुलसचिव/समस्त अधीक्षक।
10. श्री रामाश्रय प्रसाद, कनिष्ठ सहायक, निर्देशानुसार व्यवस्था हेतु।
11. जनसम्पर्क अधिकारी।
12. समस्त सूचनापट्ट।
13. सम्बद्ध पत्रावली।

13/3
सहायक कुलसचिव (प्रशासन)

योग प्रशिक्षण

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

पत्रांक : सा॰2143/2023 | दिनांक : 07 फरवरी, 2023

कार्यालय-ज्ञाप

माननीय कुलपति महोदय के आदेश दिनांक 03.02.2023 के क्रम में दिनांक 14 फरवरी, 2023 को विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति पं॰ विद्यानिवास मिश्र की पुण्यतिथि के अवसर पर बौद्ध दर्शन विभाग एवं विद्याश्री न्यास के संयुक्त तत्वाधान में ''संस्कृत कवि गोष्ठी'' अपराह्ण 03.00 बजे से योग साधना केन्द्र में अधोलिखित विवरणानुसार आयोजित है -

अध्यक्ष - प्रो॰ हरेराम त्रिपाठी, कुलपति
मुख्य वक्ता - प्रो॰ गोपबन्धु मिश्र
विशिष्ट वक्ता - प्रो॰ कृष्णाकान्त शर्मा
संयोजक - प्रो॰ हरिशंकर पाण्डेय

7-2-2023
कुलसचिव
सं॰सं॰वि॰वि॰, वाराणसी

प्रतिलिपि – सूचनार्थ।

1. सचिव कुलपति को कुलपति महोदय के अवलोकनाथ
2. प्रो॰ गोपबन्धु मिश्र, मुख्य वक्ता।
3. प्रो॰ कृष्णाकान्त शर्मा, विशिष्ट वक्ता।
4. प्रो॰ हरिशंकर पाण्डेय, संयोजक।
5. श्री दयानिधि मिश्र, सचिव, विद्याश्री न्यास।
6. निदेशक, प्रकाशन/अनुसंधान संस्थान।
7. सिस्टम मैनेजर।
8. आशुलिपिक कुलसचिव/वित्त अधिकारी।
9. सहायक कुलसचिव (प्रशासन)
10. अधीक्षक, सामान्यानुभाग
11. सम्पत्ति प्रभारी को इस आशय से कि दिनांक 14.02.2023 को सफाई आदि कराकर योग साधना केन्द्र खोलने की व्यवस्था कराने हेतु।
12. समस्त विभागानुभाग।
13. सम्बद्ध पत्रावली।

7-2-2023
कुलसचिव
सं॰सं॰वि॰वि॰, वाराणसी